प्रस्तावना।

इस ईश्वरीय सृष्टिमें मात्र यावत् प्राणीवर्ग ऐसाही देखने में आताहै जो कि अपनी मातृभाषासे स्पष्ट वाग्व्यवहार करता हुआ परस्पर एक दूसरेके तात्पर्य्यके बोधनमें समर्थ होताहै। उसमें भी इस पुरुष वर्गमें कहीं कहीं ऐसी चमत्कृति देखनेमें आती है कि समय २ पर यह ऐसा उचित तथा पक्षपातर हित न्यायगर्भित बोलता है जो कि आबाळ वृद्ध राजासे लेकर रङ्क तक उसको सभी धर्म शासनावत् या राज शासनावत् बुद्धि पूर्वक स्वीकार करतेहैं। उदाहरण के लिये जैसे इस गत १८ शताब्दीमें होने वाला (गिरिधर) उपनामक हरिदास संज्ञक उदासीन साधु हुआहै वैसा समयानुरूप सवमान्य उचितवक्ता शीघ्रहोना कठिनहै यह कोई किसी शास्त्रका विद्वान् या अनेक ग्रन्थोंका रचयिता प्रख्यात कवि नथा किन्तु एक साधारण प्रकृतिका अनुभवी तथा शान्त विरक्त साधु महात्मा था मातृ भूमि इसकी पञ्जाब तथा साधुवेशसे विचरता इसका मात्र गङ्गाजीके तीरपर हुआ करता था यह विरक्त होनेसे अपनी रचना के लिखने पढ़नेका बखेड़ा नहीं करताथा किन्तु समय २ पर अपने भावको शीघ्र कविकी तरह कुण्डली या छन्द कह करताथा कभी२कोई समीपवर्ती महात्मा उसको रोचक जानकर सर्वोपकारार्थ लिखलेतेता तो एकसे दूसरा उससे फिर दूसरा

श्रीगणेशाय नमः ।

गिरिधररायकृत-

* कुण्डलिया. *

प्रथमभाग १

दोहा—एक रदन गजमुख बदन सुमति सदन गणराज ।
मूषक वाहन नाय सिर, पूजत आपन काज ॥

कुण्डलिया ।

जय जय श्री वेङ्कटरमण शेषाचल महराज ।
अष्ट सिद्धि नव निद्धिदा भक्तन सारन काज ॥
भक्तन सारन काज करो दाया अपनी विभु ।
जन उपकारी काज आज श्री खेमराज प्रभु ॥
गिरिधरकृत कुण्डली ख्यात तुम्हरे पद जय जय ।
चचल चतुर सुजान काज तुवपद करि जय जय॥
जियनो मरिवो ये उभै नहिं है अपने हाथ ॥
जानत है वे नन्दसुत निहँसत बछरनसाथ ॥

बेटा निगरो बापसों, करि तिरियन को नेहु ।
लटापटी होनेलगी मोहिं जुदा करिदेहु ॥
मोहिं जुदा करिदेहु घरीमा माया मेरी ।
लेहों घर अरु द्वार करों मैं फजिहत तेरी ।
कह गिरिधर कविराय सुनो गदहाके लेटा ।
समय परचोहै आय बापसे झगरत बेटा ॥ ८॥
रही न रानी केकयी अमर भई यहबात ।
कवनपूर्वले पापते बन पठयो जगतात ॥
बन पठयो जगतात कन्त सुरलोक सिधारेउ ।
जेहिसुत काजे मरेउ राउ नहिं वदन निहारेउ ॥
कह गिरिधर कविराय भई यह अकथकहानी ।
यश अपयश रहिगयउ रहीनहिं केकयिरानी॥६॥
साई ऐसे पुत्र से बाझरहै वरु नारि ।
निगरविटे बापसे जाय रहै ससुरारि ॥
जायरहै ससुरारि नारिके नाम बिकाने ।
कुलके धर्म्म नशाय और परिवार नशाने ॥

भाषाचालपिचानि वहुरि उतपात न होई ।
जो कुछ लागे दोष अरे सुन आवे रोई ॥
कह गिरिधर कविराय समयपर देत हॅंगारी ।
मरापुरुष जिय जान जने पर घर गइनारी ॥१०॥
काचीरोटी कुचकुची, परतीमाछी नार ।
फूहर वही सराहिये, परसत टपके लार ॥
परसत टपके लार झपटि लरिका सोचावे ।
चूतर पोंछे हाथ दोउकर शिर सजुवावे ॥
कह गिरिधर कविराय फूहर के याहीधेना ।
कजरौटा नहिं होइ लुकाठे आजे नैना ॥ ११ ॥
चिन्ता ज्वाल शरीरकी, दाह लगे न बुझाय ।
प्रकट धुवा नहिं देखिये, उरअन्तर धुँधुवाय ॥
उर अन्तर धुँधुवाय जरे जस काचकी भट्ठी ।
रक्तमास जरि जाइ रहै पाजरिकी ठट्ठी ॥
कह गिरिधर कविराय सुनोरे मेरे मिन्ता ।
वे नर कैसे जिये जाहि व्यापी है चिन्ता ॥ १२ ॥

यह जानीजस जलजंह बादर श्याम विशेखि ॥
बादर श्याम विशेखि देखि तोताकोधायो ।
एकसमय सकटपरे को न काके घरआयो ॥
कह गिरिधर कविराय धुवाको यह फल पायो ।
जोजलको तृगयो सोइ नयननजलआयो ॥१८॥
साईं नर न कीजिये गुरु पण्डित कवियार ।
बेटा बनिता पँवरिया यज्ञ करावनहार ॥
यज्ञ करावनहार राजमन्त्री जो होई ।
विप्रपरोसी वैद्य आपको तपै रसोई ॥
कहगिरिधर कविराय युगनते यह चलिआई ।
इन तेरहसों तरहदिये बनि आवै साईं ॥ १६ ॥
बैरी बँधुवा बानियां ज्वारी चोर लबार ।
बटपारी रोगी ऋणी नगरनारिको यार ॥
नगरनारिको यार भूलि परतीत न कीजै ।
सौ सौगंदखाइ चित्तमें एक न दीजै ॥
कह गिरिधर कविराय परै आवै अनगैरी ।

ऋण उधारके रीति मागते मारन धावै ॥
कह गिरिधर कविराय जानिरहे मनमें रूठा ।
बहुत दिना हेजाय कहै तेरो कागज झूठा ॥२०॥
सोना लादन पियगये सूना करिगये देश ।
सोना मिले न पिय मिले रूपाह्वेगे केश ॥
रूपा ह्वेगे केश रोय रँग रूप गँवावा ।
सेजनको विश्राम पिया विन कबहुँ न पावा ॥
कह गिरिधर कविराय लोन विन सबै अलोना ।
बहुरि पियाघर आव कहा करिहौ लैसोना ॥२१॥
मोती लादन पियगये धुरपटना गुजरात ।
मोती मिले न पियमिले युग भरि बीती रात ॥
युगभरि बीती रात विरहिनी आनि सतावै ।
चोकिपरी व्रजनारि पियाको लिखा न आवै ॥
कह गिरिधर कविराय गोपिका यहकह रोती ।
आगि लगै वह देश जहा उपजतिहै मोती ॥ २२ ॥
जाको धन धरती हरि ताहि न लीजे सग ।

वर्दीकिये काहोय नदीको तीर न छोड़ा ॥ २५ ॥
दौलत पाइ न कीजिये, सपनेमें अभिमान ।
चचलजल दिन चारिको, ठाउँ न रहत निदान ॥
ठाउँ न रहत निदान जियत जगमें यशलीजे ।
मीठे वचन सुनाय विनय सनहीकी कीजे ॥
कह गिरिधर कविराय अरे यह सबघटतौलत ।
पाहुन निशि दिन चारि रहत सबहीकेदौलत २६॥
गुणके गाहक सहसनर, विनु गुण लहै न कोय ।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय ॥
शब्द सुनै सबकोय कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊको यहरंग काग सब भये अपावन ॥
कह गिरिधर कविराय सुनोहो ठाकुर मनके ।
विनु गुण लहै न कोइ सहस नर गाहकगुणके॥२७॥
मित्रविछोहा अतिकठिन, मतिदीजे करतार ।
धाके गुण जब चित चढै, वर्षत नयन अपार ॥
वर्षत नयन अपार मेघ सावन झरिलाई ।

जेहि हाथे हाथी हन्यो तेहि मेढक जनिमार ॥
तेहि मेढक जनिमार कुलहि जनि दोप लगावे।
वरु फॉका करि मरे जगतमें शोभापावे॥
कह गिरिधर कविराय हँसे जम्बुक औ दिंगिनि।
समय परेकी वात सिहका सिरवे सिहिनि॥२१॥
हिरना विरझेड सिहसे औझरखुरी चलाय।
झारखण्ड झीनापरचो सिहा चलोपराय ॥
सिहा चलोपराय समय समरत्थ विचारी।
कलिहि कालमालाइ हँसे हँसिके पगधारी॥
कह गिरिधर कविराय सुनोहो मेरे अरना।
आजुगई करिजाय सकारे मैं की हरना॥ २२॥
वगुला झपटचो वाजपर वाज रह्यउ शिरनाय।
दे अँधियारी पगुवध्यो चेटक देफहराय॥
चेटकदे फहराय धनी विनु कौन चलावे।
डरे साकरी डार करे जो जो मन भावे॥
कह गिरिधर कविराय सुनो पश्चिम के नकुला।

नैसा रहा न पास यार मुखसे नहि बोले ॥
कहगिरिधर कविराय जगत यहि लेखाभाई ।
बिनु बेगरजी प्रीति यार विरला कोइसाई ॥३६॥
दादुरकेर दरेरपर लै फणपति निजशीश ।
समय आपनो जानिकै मनहि न लायो ईश ॥
मनहिं न लायोईश शीशपर चाल्यो भाई ।
परचो आपदाआय लाजपति सबै गँवाई ॥
कहगिरिधर कविराय कहाँ लै आनी आदर ।
गुणकीमति घटिगई शीशपर बोले दादुर॥३७॥
कैंचुवा नागिनिसे कहै सुनो न हेतु अचार ।
हम तुमसे अस रीतिहै लाख भाँति व्यवहार ।
लाखभाँति व्यवहार व्याह सावनमें कीजै ।
क्वार चैतको घाम कटक दल हमरोछीजै ॥
कह गिरिधर कविराय कहासे आये हेतुवा ।
शेषनाग मरिजाय नागिनिहि व्याहैकेंचुवा ॥३८॥
कोईभवँर गुलाबतजि गये जो कुरकुरपास ।

हां विकानो आय छेदकारि कटि में बाध्यो ।
नहरदी विनछोन मास ज्यों फूहर राध्यो ॥
ह गिरिधर कविराय कहा लगि धरिये धीरा ।
नकीमत घटिगई यहै कहि रोयोहीरा ॥ ४१ ॥
हिये लटपट काटिदिन वरु घामें मा सोय ।
ांह न वाकी बैठिये जो तरु पतरो होय ॥
ो तरु पतरो होय एकदिन धोखादैहै ।
ा दिन बहै बयारि टूटि तब जरसे जैहै ॥
ह गिरिधर कविराय छांह मोटेकी गहिये ।
ता सब झरिजाय तऊ छांह मा रहिये ॥ ४२ ॥
व नीर न सरवरो बूंदस्वाति की आश ।
हरि तृण नहिं चरि सकै जो अनकरै पवास ॥
ो अन करै पवास विपुल गज युत्थ विदारै ।
पुरुष तजै न धीर जीव वरु कोठ मारै ॥
ह गिरिधर कविराय नीचनोधक भरिजावै ।
ातर वरु मरिजाय नीरसरवर नहिं पावै ॥४३॥

कहगिरिधर कविराय नवे जस बन्दर भल्ला।
तोसदान बन्दूक हाथमें पत्थरकल्ला ॥ ४६॥
साई जगमें योगकरि मुक्ति न जाने कोय।
जन नारी गवने चली चटीपाटकीरोय ॥
चटी पाटकीरोय जान नहिं कोई जीकी।
रही सुरति तनछाय सुछतिया अपने हियकी॥
कह गिरिधर कविराय अरे जनिहोहु अनारी।
मुँहसे पहे बनाय पेटमें बिनवे नारी ॥ ४७॥
दोहा—नवलनारि रोवै नहीं, कहै पुकारि पुकारि।
जस पिय तुम हमसन करी,वैसेकरव प्रचारि॥

कुण्डलिया।

गटपतिपनको धर्म्म है कर इतनको ध्यान।
जिमीदोज रैनसिरे मनका रासोजान ॥
मनवारासोनान किलेपर तोप चढावो।
कोश कोश को गिरद काटि मैदान करावो।
कह गिरिधर कविराय रान राजनके साईं ।

महो निपट गरीन कहा घर बैठे सइहौ ॥
कह गिरिधर कविराय बात सुनिये हो हूसा ।
उ दिननका फेर निलारिहि सिखै मूसा॥५१॥
कौवाकहै मरालसे कहाजाति कहगोत ॥
मऐसे बद रूपिया कहीं न जगमें होत ॥
कहू न जगमें होत महामैले मलसाना ।
ठि कचेहरी जाय वेद मर्याद न जाना ॥
कह गिरिधर कविराय सुनोहो पठी होवा ॥
न्य मुल्क यह देश जहाके राजा कौवा ॥५२॥
ाकरि गिरगिटसे कहै का मारतिहौ सान ।
पी तुम्हरे हिरदेन मर्हं सो हमहूं अर जान ॥
ो हमहू अर जान करब हम धनके जाला ।
तहा न तुम्हरी डीठि तहा अब हमरी जाला ॥
कह गिरिधर कविराय बात सुनिये हो धाकर ।
लगे चपेटा मोर तहा नहिं तहँवा माकर ॥५३॥
नयना लगन अपारहै पटा अपटहै जाय ।

व्यवहारी जो होय तऊ तन मन धन दीजै॥५६॥
ौड़ घोड़े आछतहि गदहन आयो राज ।
ोआ लीजे हाथमें दूरिकीजियेबाज ॥
ूरिकीजिये बाज राज पुनि ऐसो आयो ।
िह कीजिये कैद स्यार गजराज चढ़ायो ॥
कह गिरिधर कविराय जहां यह बूझि बड़ाई ।
तहा न कीजे भोर साझ उठि चलिये साई॥५७॥
ाई अवसरके पड़े कोन सहै दुसद्वन्द ।
ाय बिकाने डोमघर वै राजा हरिचन्द ॥
राजा हरिचन्द्र करै मरघट रखवारी ।
फिरे तपस्वी वेप फिरे अर्जुन बलधारी ॥
कह गिरिधर कविराय तपै वह भीम रसोंई ।
कोन करै घटिकाम परे अवसरके साई ॥ ५८ ॥
ासमै चले बिदेशकहँ काची लादि कुम्हार ॥
पांऋतु वैरिनिभई बादर कीन्होंमार ॥
ादर कीन्होंमार इतै उत कछुनहि सूझै ।

म अकाशमें रहो हमारो पृथ्वी द्वारो ॥
हह गिरिधर कविराय सुनोहो मनमेमगन्न ।
डिऐडि बतलाहि सूर्यके सन्मुख जुगन्नू ॥६७॥
बिना विचारे जो करै सो पीछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो जगमें होत हँसाय ॥
जगमें होत हँसाय चित्तमें चैन न पावै ।
बानपान सन्मान राग रँग मनहिं न भावै ॥
हह गिरिधर कबिराय दु ख कछु टरत न टारे ।
टकत है जिय माहिं कियो जो बिना विचारे६८
गेती ताहि बिसारिदे आगे की सुधि लेइ ।
ो बनिआवै सहजमें ताहीमें चित्त देइ ॥
ाहीमें चितदेइ बात जोई बनिआवै ।
ुर्जन हँसै न कोइ चित्तमें खता न पावै ॥
हह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती ।
ागेको सुखसमुझि होइ बीती सो बीती ॥ ६९॥
ाई अपने चित्तकी भूलि न कहिये कोइ ।

र्डीफजीहतहोय तनों नदियनकी साईं ॥ ७२ ॥
ाई सन अरु दुष्टजन इनको यह सुभाव ।
ाल सिचाँ‌ि आपनी परवन्धन के दाव ॥
रवन्धनके दार साल अपनी सिचवावे ।
डकाटिकिफवै तऊ वह वाज न आवे ॥
ह गिरिधर कविराय जरै आपनी कटाई ।
लमें परि सरगये तऊ छाड़ी न खुटाई ॥ ७३॥
ाई समय न चूकिये यथा शक्तिसन्मान ।
ाजाने को आईहै तेरी पौरि प्रमान ॥
ेरी पौरि प्रमाण समय असमय तकि आवे ।
ाको तू मन खोलि अक भरि हृदय लगावे ॥
ह गिरिधर कविराय समैयामें सुधि आई ।
शीतल जल फल फूल समयजनि चूकोसाई७४॥
ाई ऐसी हरि करी बलिके द्वारे जाय ।
पहिले हाथ पसारिके बहुरि पसारे पाँय ॥
हुरि पसारे पायँ मतो राजाने वता[illegible] ।

वडीफजीहतहोय तनो नदियनकी साई ॥ ७२ ॥
साई सन अरु दुष्टजन इनको यहै सुभाव ।
साल सिचावे आपनी परवन्धन के दाव ॥
परवन्धनके दाव साल अपनी सिंचवावे ।
मूडकाटिकैफने तऊ वह वाज न आवे ॥
कह गिरिधर कविराय जरे आपनी कटाई ।
जलमें परि सरगये तऊ छाडी न खुटाई ॥ ७३॥
साई समय न चूकिये यथा शक्तिसन्मान ।
काजानै को आइहै तेरी पौरि प्रमान ॥
तेरी पौरि प्रमाण समय असमय तकि आवै ।
ताको तू मन खोलि अक भरि हृदय लगावै ॥
कह गिरिधर कविराय समयामें सुधि आई ।
शीतल जल फल फूल समयजनि चूकोसाई७४॥
साई ऐसी हरि करी वलिके द्वारे जाय ।
पहिले हाथ पसारिके वहुरि पसारे पाँय ॥
वहुरि पसारे पायँ मतो रानाने वतायो ।

ं फिरि फिरि चोरी करैं ये फिरि फिरि लपटायँ॥
ये फिरि फिरि लपटायँ नेत्र बहुरे भरिआवें।
खान पान तनुत्याग रात दिनहीं दुखपावें॥
कह गिरिधर कविराय सुनो तुम श्रवणनि नैना।
लोग देइँ अकलंक परें जग परवश नैना॥ ७८॥
साईं सुमनपलाश पर सुवा रह्यो जो आय।
डलकरीसी चोंचपर मधुकर बैठोजाय॥
मधुकर बैठोजाय सुवा तत्काल बचायो।
कोटि कष्ट करि पाँय मारि करि छूटन पायो॥
कह गिरिधर कविराय वेगि घर बनै बधाई।
दीजै बिदा पलाश नियत घर जैये साईं॥ ७९॥
साईं तेली तिलन सों कियो नेह निर्वाह।
छानि फटक उजर करी दई बड़ाई ताह॥
दई बड़ाई ताह पञ्चमहँ सिगरेजानी।
दै कोल्हूमें पेरि करी येकत्तर घानी॥
कह गिरिधर कविराय यही माया प्रभुताई।

मधुर मिष्ट हम अधिक कछुक जियसे जनि जान्यो।
कह गिरिधर कविराय कहत साहबसे रहुवा ।
तुम नीचे फल वेलि वृक्ष हम ऊचेमहुवा ॥ ८३॥
गुलतुर्रासों जायकै, वार्ता करत करील ।
हम तुम सूखे एकसों पूछ देखिये भील ॥
पूछ देखिये भील भेद जो जानै मेरो ।
तोहू पूछ बुलाय भेद जो जानै तेरो ॥
कह गिरिधर कविराय नातरि करिहौ हुर्रा ।
अव जनि भूलि गुमान करो फिरिहौ गुलतुर्रा ८४
हुक्का बाधो फेंट में नै गहि लीन्ही हाथ ।
चलेराह मे जातहै लिये तमाखू साथ ॥
लिये तमाखू साथ गैल को धधा भूल्यो ।
गइ सर्वचिंता भूलि आगि देखत मन फूल्यो ॥
कह गिरिधर कविराय जो यमकर आयो रुक्का ।
जिय लैगयो जो काल हाथ में रहिगाहुक्का॥८५॥
पगडी सूही बाधि के भयो सिपाही लोग ।

अति आतुर नहिंहोय वहुरि अनखैहै राजा॥८८॥
कृतघन कनहु न मानहीं कोटि करे जो कोय।
सर्वस आगे राखिये तऊ न अपनो होय॥
तऊ न अपनो होय भलेकी भली न मानें।
कामकाढ़ि चुपरहे फेरि तिहि नहिं पहिचानें॥
कह गिरिधरकविराय रहत नितहीं निर्भयमन।
मित्र शत्रुना एक दामके लालच कृतघन॥८९॥
नमोनरायण निरामय कारन कारण रहत।
सवधसत्ता जात पुनि गुण क्रिया असहत॥
गुण क्रिया असहत कल्पना सर्व अतीता।
नेति नेति करके भई चकृत सुरती गीता॥
कह गिरिधर कविराय ननामें सत रज तमो।
निरावर्ण इक दाट आपकू आपे नमो॥९०॥
गिरिधर सो जो गिरिधरे प्रयत्न शून्य निन रोद।
गिरि कारण सूक्ष्म स्थूलतन गिरिधर प्रत्यक वेद॥
गिरिधर प्रत्यक वेद जोहै निनहीं प्रापत।

कायिक वाचिक मानसी सबी आपनी भूल ॥
सबी आपनी भूल मोभाहित करै जुकरनी।
ज्यों रविचाहि तेज जाय खद्योतकी शरनी ॥
कह गिरिधर कवि पुरुष साच्य सो सबी अनातम।
स्वत सिद्ध अपवर्ग रूप चितघन तू आतम ९४
खल साजनदो जगतमें तिनकींहि यह रीत ।
ज्यों सूचीको अग्र भाग पृष्ठभाग है मीत ॥
पृष्ठभाग है मीत एकतो छिद्र करहिं ।
दूसर तिसे अछादत ततछिन गुन करि भरहिं ॥
कह गिरिधर कविराय आत्मा एकहि अमल ।
निज माया करि बन रह्यो सोइ साजन खल९५॥
चिदविलास प्रपञ्च यह चिदविवरत चिद रूप ।
ऐसी जाकू दृष्टिहै सो विद्वान अनूप ॥
सो विद्वान अनूप महाज्ञानी तत दरसी ।
निज आतम विनरेक वारता सुने न करसी ॥
कह गिरिधर कविराय विवकी त्यागें निद ।

कायिक वाचिक मानसी सबी आपनी भूल ॥
सबी आपनी भूल मोक्षहित करे जुकरनी ।
ज्यों रविचाहे तेज जाय खद्योतकी शरनी ॥
यह गिरिधर कवि पुरुष साध्य सो सबी अनातम।
स्वत. सिद्ध अपवर्ग रूप चितवन तू आतम ९४
खल साजनको जगतमें तिनकीहै यह रीत ।
ज्यो सूचीको अग्र भाग पृष्ठभाग है मीत ॥
पृष्ठभाग है मीत एकतो छिद्दर करिहै ।
दूसर तिसे अच्छादत ततछिन गुन करि भरिहै ॥
यह गिरिधर कविराय आत्मा एकहि अमल ।
निज माया करि यन रच्यो सोइ साजन खल९५॥
चिदविलास प्रपच यह चिदविवरत चिद रूप ।
ऐसें जाकू दरिहै सो विद्वान अनूप ॥
सो विद्वान अनूप महाज्ञानी तत दरसी ।
निज आतम वितरेक वारता सुने न करसी ॥
यह गिरिधर कविराय विवको त्यागि जिद ।

धावैकवी केदाररसड पुनि जावै मक्के ॥
कहगिरिधरकविराय कुफरके पलनेझूल्यो ।
बकनेलग्यो तुफान जमा सब अपनी भूल्यो९९॥
कोपकरै जिस शरसपर परमेश्वर जब आप ।
लोकन साथ मिलाप पुनि चाहै दिन अरु रात ॥
चाहै दिन अरु रात वासना उपजै खोटी ।
कृपणताकेलिये बुद्धि होजावै मोटी ॥
कह गिरिधर कविराय आपनो करिकै लोप ।
अनातम चिंतनकरै यही ईश्वरको कोप ॥ १००॥
करै कृपा जिस पुरुष परअतिशय करिकै राम ।
ताको कोई ना फुरे लौकिक वैदिक काम ॥
लौकिक वैदिक काम रहै नहिं करनो बाकी ।
हर जगा हर वखत ब्रह्म की होवै झाकी ॥
कह गिरिधर कविराय अविद्याजिसकी मरै ।
सर्व क्रिया के माहि एक खुद दरशन करै॥१०१
भाग्य सर्वत्र फलतहि नच विद्या पौरुषसरल ।

रभय अविद्या सहित अरोपत जिसमें देव॥१०४
अदृष्ट समान वलिष्ट नहिं देख्यो जगमें मीत ।
करै भगोड़ा सूरको पुनि कायरकी जीत ॥
पुनि कायरकी जीत धनीको करहे कँगला ।
निर्धनको करै धनी शहर करिडारै जँगला ॥
कहगिरिधर कविराय इष्टको करै अनिष्ट ।
पुनि अनिष्टको इष्ट ऐसो कौन अदृष्ट ॥ १०५ ॥
अवश्य मेव भुक्तव्यहै कृतकर्म शुभाशुभ जोय ।
ज्ञानी हँस करि भोगहै अज्ञानी भोगै रोय ॥
अज्ञानी भोगै रोय पुन पुनि मस्तक कूटै ।
प्रारब्ध जो होय विना भोगे नहि छूटै ॥
कह गिरिधर कविराय नदीरथ होत रहस्य ।
जैसे जैसे भाग पुरुषके फलै अवश्य ॥ १०६ ॥
थोरे दिनके कारणे कवन उपाधि करै ।
किस जीवनके वास्ते जगमें पचि पचिमरै ॥
जगमें पचि पचि मरै आपनी उन्नत सोवै ।

त्यों नर मजवी सगते नरमजवी होजात ॥
नर मजवी होजात वात हिरदेधारि लीजै।
प्राण जायँतो जाँय न मजवीका सग कीजै ॥
कह गिरिधर कविराय अधमहै सबसे शूकर ॥
ताते भींसो अधम मजबका जो जो कूकर११०॥
फाँसी जब लग मजहबकी तब लग होत न ज्ञान।
मजहब फाँसी टूटे जबै पावै पद निर्वान ॥
पावै पद निर्वान निरजन माँहि समावै।
जनम मरन भव चक्र विषे फिर योनि न आवै ॥
कह गिरिधर कविराय बोध बिन भ्रमै चौरासी।
तब लग होत न ज्ञान मजहबकी जबलग फाँसी॥
गडे अविद्याने रचे हाथी डूब अनत।
जोउगिर्‍यो जिस खातमें धँसगयो कान प्रयत ॥
धँसगयो कान प्रयत आपको सुनै न देखै।
बहिरो अँधरो भयो दशो दिशि तम इक पेखै ॥
कह गिरिधर कविराय यद्यपि शास्त्र स्मृतिपढे।

अमृत भक्षण करैं उदगारन रैत मुरैया ॥
कह गिरिधर कविराय अभिमानी पाजी मृजी ।
आतम विद्या छोर रागनी गावें दूजी ॥ ११५ ॥
कीजे ऐसी कथा मत निष्फल कथनी जोय ।
सिद्ध न जिसमें अर्थकी नहिं परमारथ होय ॥
नहिं परमारथ होय वार्ता सो सन तजिये ।
राम कृष्ण नारायण गोविंद हरि हर भजिये ॥
कह गिरिधर कविराय सुधा अनुभवरस पीजे ।
आतम अरुसधान होय सो चरचा कीजे॥११६॥
हानी नाहित तन्नकी होवत अन्न समान ।
चौरासी लख जीव मिल जेकर वंक तुफान ॥
जेकर वंक तुफान नवल कछु पाछे राखे ।
जो जो कहनो नाहिं सोइसो पुनि पुनि भाषे ॥
कह गिरिधर कवि तपे भानु अरु बरसे पानी ।
चलै पवन अत्यत व्योम की जथा नहानी॥११७
धाटो बाधो नारह्यो गईजीत पुनि हार ।

दान भोग बिन नाश होत जो दियो न खायो१२०
तपकरवे को नर्मदा मरवेको सुरधुनी ।
भजन करन को हरि हर भाषे ऋषि वर मुनी ॥
भाषे ऋषिवर मुनी वासिष्ठ परासर व्यास ।
दान करे कुरुक्षेत्र साधन ज्ञान सन्यास ॥
कह गिरिधरकविराय शिवोह शिवोहजप ।
करन ग्रामको रोक न या समहै कोई तप॥१२१॥
गपोडा भाषाका कोई सस्कृतका कोय ।
कोइ गपोडा पारसी अगरेजी पुनि होय ॥
अगरेजी पुनि होय गपोड़ा कोई अरबी ।
ब्रह्मज्ञान बिन विद्या सब ज्यों पाऊमें दरबी ॥
कह गिरिधर कविराय वेग समझो कोइ मोडा ।
जाकरि आतम लभे भलाहै सोइ गपोडा॥१२२॥
भाषा भूसा फेंकके सडी सस्कृत डार ।
भय आरोपत निस विषे सोह चिदनिरधार ॥
सोहचिद निरधार त्याग सगरी शिरदरदी ।

ऐसो जगमें कौनहै जोकर सके तगीर ॥
जोकरसके तगीर सोतो कछुहू नहिं मानव ।
देव यक्ष गधर्व नउतपत हूवो दावन ॥
कह गिरिधर कविराय नाश जिन भर्मको कियो ।
शोक लाज सब त्याग ठीकरो हाथमें लियो १२६
भिक्षु बालक भारजा पुनि भूपति यह चार ।
अजानेअस्ती नास्तिकछु देही देहि पुकार ॥
देही देहि पुकार निशि वासर आठो याम ।
जाग्रत सुपने माहि फुरै ना दूसर काम ॥
कह गिरिधर कविराय जगतमें कोउ तितिक्षु ।
जिनको तृष्णा नाहिं सो ऐसो विरलो भिक्षु १२७
रहनो सदा इकातको पुनि भजनो भगवत ।
कथन श्रवण अद्वैतको यही मतोहै सत ॥
यही मतो है सत तत्त्वको चितवन करणों ।
प्रत्यक ब्रह्म अभिन्न सदा उर अतर धरणों ॥
कह गिरिधर कविराय वचन दुर्जनको सहणों ।

लोक ईषणा आदि कामना सकल निवारै ॥
कह गिरिधर कविराय त्याग अहता तनकी ।
तत्त्वज्ञान उपदेश दुष्टता हरही मनकी ॥१२१॥
मनरे मदी बात छद गधा तज हकार ।
ज्ञान धनुप उरमें ग्रहो करहे ब्रह्म टकार ॥
करह ब्रह्म टकार जरा तू पग धर आगे ।
भर्म जो पच प्रकार हृदय सों ततछन भागे ॥
कह गिरिधर कविराय मूल ससारका सुनरे ।
नष्ट होय अज्ञान द्वैत फिर रहै न मनरे ॥१२२॥
देही सदा अरोगहै देह रोगमयचीन ।
यह निश्चय परिपक जिसू सोइ चतुर परवीन ॥
सोइ चतुर परवीन विवेकी सो है पंडित ।
करे अत्यत नरसन आतमा लखै अखडित ॥
कह गिरिधर कविराय आपना आप सनेही ।
परमानद स्वरूप और नहिं एहै देही ॥ १२३ ॥
अत्यत मलिन यह देहहै देही अतिशय शुद्ध ।

आतम सबते पेंगे जु कलिपत कारज कारण१२६
अमर नाथ इक आतमा सन देवनको देव ।
कोटिन मध्ये सतजन जानत है कोउ भेव ॥
जानतहै कोउ भेव विवेकी पुरुष अकामी ।
अनुगत अतर वाज व्योमवत अतरजामी ॥
कह गिरिधर कविराय निना अवेवजुभमर ।
इंद्रिय गणको नाथ आतमा सोतृ अमर१२७
नारायण यह आपहै स्वप्रकाश विज्ञान ।
निजस्वरूपको भूलवो है कल्पित अज्ञान ॥
है कल्पित अज्ञान नाना विध नाच नचावै ।
घटी यत्र ज्यों उर्ध अर्ध इत उत भरमावै ॥
कह गिरिधर कविराय पावै जब ज्ञान रसायन ।
स्वप्रकाश विज्ञान आपको विषे नरायन॥१२८॥
स्वत परमेश्वर आपहै बन्यो चहै कछु और ।
अविदिक साधन में लग्यो मृढनको शिरमौर ॥
मृढनको शिरमौर आपको आपन जानै ।

यों सत चिद आनद निन होत प्रपच असार ॥
त प्रपच असार जहा जग कारन कारज ।
ड अनित्य दुख रूप वेद वित कहत अचारज ॥
इ गिरिधर कविराय सोइ तू अनुगत पुर पुर ।
या रागनी तान ग्राम मुरछनमें इकसुर ॥ १४२ ॥
प्राचिद द्रश्यवर्गको पुनि द्रश्यमें अनुसूत ।
नअध्यस्त तामें सबै यावत भौतिक भूत ॥
ावत भौतिक भूत अरोपित रज्जुसर्पवत ।
म कर सिद्ध प्रसिद्ध अनातम रूप असत सत ॥
हगिरिधर कविराय आतमा तू इसमद्या ।
ल्पनारहित अशून्य जुचेतन द्रश्यको द्रष्टा १४३
सत्ता जो सब जगतको सो भ्रमाधिष्ठान ।
ोईप्रत्यक आतमा सोइ ब्रह्म भगवान ॥
ोइ ब्रह्म भगवान सच्चिदानद विश्वेश्वर ।
त्रेधा भेद परिछेद रहित अमीत परमेश्वर ॥
हं गिरिधर कविराय एक रस जिसकी सत्ता ।

फूटी एक बदाम नरासे धूसर दिनको ।
विना आपने आप भरोसा और न तिनको ॥
कह गिरिधर कविराय रहीना बाकी [illegible]
कीनो जनी हिसाब न निकसी कौडो [illegible]॥ १६३॥
पोथी पाना फेंकके विचरो [illegible] ।
आतम अरु सयानकर दिलमें [illegible] ।
दिलमें रहे अराम और [illegible] ।
अहब्रह्म परिपूरण निशि [illegible] ॥
कह गिरिधर कविराय [illegible] ।
तू सबको थिष्ठान [illegible] ॥ १६४॥
जानो नहिं तिन [illegible] ।
तिन शखशनकी [illegible] नहिं [illegible]
तिनसों नहिं [illegible] ।
राग द्वेष [illegible] ।
कह [illegible]
पाकी [illegible] ।

नाहीं सासुर जमाति नहि सेवक सेव्यसचव।
तास किया पिस जोगरे सोमुरम जड़ अ र॥
सोमुरस जड़ अव अधको है यदु चेरा।
तिना प्रयोजन अहमक जहँ तहँ करे निसेरो॥
कह गिरिधर कविराय किसीको कहिये काहीं।
जो होवे कछु निसनन सोतो सपन नाहीं १६६॥
जामुहानिसे लाभ नहि   नहि हान
तार्य

विगरे तो जो होय कछु विगरनवालीसे ।
अक्षेद्य अदाह्य अशोष्यको कौन शस्त्र कोभे ॥
कौन शस्त्र कोभे बुद्धि यह जिसने पाई ।
तिसके ढिग दिलगीरि कदाचित नाही आई ॥
कह गिरिधर कविराय कालत्रय जोना बिगरे ।
असल अछेद्य अकृतम सोकहु कैसे बिगरे १७४ ॥
देहदु खकी खानहै गृह सत शोक किसान ।
अविद्या जोहै आपनी जन्माकर पहिचान ॥
जन्माकर पहिचान समझ जो सुखकी खानी ।
जामें वेदप्रमाण पुन आपत की बानी ॥
कह गिरिधर कविराय निरकुश तृप्तीएह ।
छूटेतनु अभिमान द्रष्ट फिर रहै न देह ॥१७५॥
साक्षीका लक्षण सुनो साक्षी कहिये सोइ ।
उदासीन चेतन्य पुनि समीपवर्ती जोइ ॥
समीपवर्ती जोइ सोइतो साक्षी होई ।
इन लक्षण ते रहित को साक्षी कहै न कोई ॥

बिचार ज्ञान बिराग सपनका जस लस्कर।
दृढ नाहका [illegible] मिथ्या तस्कर ॥
कह गिरिधर कबिराय कहै निज होवै जाफत।
नानयरामिना प्रत [illegible] चननका आफत॥१८७
गाढ गाढ नवलगागह जब लग चाह्यहु इष्ट।
अनमुग्ग नब [illegible] सब मिटजाइ अनिष्ट॥
सब मिटजाय अनिष्ट [illegible] उत्तर [illegible] नागद।
नहा जाट नह आनन्द जब मन भया इकागर॥
कह गिरिधर [illegible] राम [illegible] फिर औ धाइ
जीव ब्रह्म दृढज्ञान बिना ना मिटहै हाद ॥१८८।
दशमाथिन अध्यासदं नामद का जो मूल।
तब लग देहाभिमान है तबलग मिटै न शूल॥
तबलग मिटै नशूल करै केती चतुराई।
दर चलै जपजजै नसुक्को होत सहाई॥
कह गिरिधर कबिराय ज्ञानदृढ देखे चसमा।
भूला विद्या नाश गोड महरहैनदशामा ॥ १८९॥

श्रद्धा शक्ती उभय कर होत साधुकी सेव ।
जगमें एक न होइजो धन्यो रहे गुरुदेव ॥
धन्यो रहे गुरुदेव भक्ति तिस करे न कोई ।
निनकार न कछुकारज उत्पन्न हुया न होई ॥
कह गिरिधर कविराय त्याग कर मलिन सपर्धा ।
जोधन होवे पास सतपर कीजे श्रद्धा ॥ १९० ॥
आतमरथी शरीररथ बुद्धि सारथीजान ।
मनडोरी इंद्रिय हय मारग विषयपिछान ॥
मारग विषय पिछान देह इद्रिय मन योगा ।
दुख सुख भोगे भोग तत्त्ववित कहे प्रयोगा ॥
कह गिरिधर कविराय हेनएही परमातम ।
बुद्धि सारथी जान देहरथ रथीतु आतम॥१९१॥
शेषी आतम देवइक पुत्रादिक सबशेष ।
यह विवेक जाकेहिये ताको कहाँ कलेश ॥
ताको कहा कलेश समझ हृदय जब आई ।
धन्यो अन्यायास तदातमरहे नराई ॥

कह गिरिधर कविराय आतम फलन न पेपी
अभय निरंजन देव आतमा मात्र अर्थी ॥१९२।
क्षिप्तमूढ विक्षिप्त पुनि एकाग्रता निरोध
पंचभूमिका चित्तकी आतम इक अविरोध।
आतम इक अविरोध भूमिकाको परकाशक
आप हुलास स्वरूप पुन जड वर्ग हुलासक।
कह गिरिधर कविराय चिदानद सदा अलिप्त
लिपाय मान मन बुद्धि वृत्तिहे जामें क्षिप्त।१९३।
जाग्रत सुपन सुषोपति मूर्च्छा पुना समाधि
पच अवस्था बुद्धिकी आतमरहित उपाधि।
आतमरहित उपाधि अकर्ता सदा अभुक्ता
क्षुधा पिपासा हर्ष शोक मत्सरते मुक्ता॥
कह गिरिधर कविराय वृत्ति विक्षेपइकाग्रत
सर्वो अनातम धर्म समाधि पर्यंत सों जाग्रत१९४
माया मोह मद राग पुनि ममता दंभरु काम।
यह जामें नहि पाइये सो परमेश्वर राम॥

सो परमेश्वर राम सर्वका जानन हारा।
और सबै अध्यरत आप विष्ठान अपारा॥
कह गिरिधर कविराय ध्यानधर सुनरे भाया।
सोतू भ्रमा दृहि अरोपित जिसमें माया॥१९८॥
आश्रय आशा उभय तजि सावै टुकड़ो माग।
कहू किनारे पड़रहे रास टागपर टाग॥
रास टागपर टांग चाह चिंता सन सोवै।
भावै जागे निशिभर अथवा दिनभर सोवै॥
कह गिरिधर कवि मरियत ठाकुर द्वार उपासरे।
धर्मशाल पुनिडाड रहे भिक्षुनिन आसरे॥१९६॥
काटेतले विद्यायके करै पुरुपको शैन।
देत समयको दोप पुनि तनकपरे नहि चैन॥
तनक परे नहि चैन काल अप आयो भारी।
जिनकी चरमें करै अगुरिया देवत गारी॥
कह गिरिधर कविराय मोल देले वेन्नाटे।
ताकर चंहे अराम गाड़कर तनमें काटे॥१९७॥

कह गिरिधर कविराय यही तो कमला रोग ।
अहता उभय प्रकार पुन यद किंचित भोग२००
तीन ईषना त्यागके करें मुमुक्ष शोध ।
सोपरिग्रहको क्योंचहे जिनके आतम बोध ॥
जिनके आतम बोध बैरागें आइ चलाई ।
आगे देवनहार जहा तहँ है महमाई ॥
कह गिरिधर कविराय सुहावे कदी न दीन ।
जिसने दई उठाय वासना मनसेतीन ॥ २०१ ॥
मेरी तेरी छोडके पक्षापक्षहि नास ।
राग द्वेषको दूरकर निजानद रसचास ॥
निजानद रसचास और रसलागे फीके ।
एक ज्ञानके भये दुःख मिटजावें जीके ॥
कह गिरिधर कविराय रगजोपरे गेरी ।
तब यह होवे सफल तजे जब मेरी तेरी ॥२०२॥
दुखी परमेश्वर बनरह्यो भई आपनी चूक ।
परमानद रसछाडके चाटन लाग्यो थूक ॥

चाहन लाग्या धन गर्मीना धहमक माइ।
तिसका चिन्तन कर गजिनम मृग टकगइ॥
कह गिरिधर कविराय न्या चाह ना मर्गी।
चीनै अपना आप फकना गार दुग्गा ॥ २०३।
मोला लोक पुकारद रमन मन हा नग
पुन जिसीको मनकर। गृहम लागिग्ग।
गृहम लागिग्ग अविद्या नतन टूटै।
मिलै जिसकी मन कुपत्तोका संग छूटै॥
कह गिरिधर कविराय त्याग कर मार्ग ओला।
जौन तौन परकार आपको लखले मोला २०४।
जोड़ वृत्ती ब्रह्ममे सर्व तरफसे मोड़।
पुन प्रमादी नरोकी तनकनरासे छोड़।
तनक न राखे छोड़ बहुत तिन साथ न बोले।
—— पार्गको अचल करे जो बहुरि न डोलै।
कह गिरिधर कविराय प्रीति विषयनकी तोड़े।
सर्व तरफसे खेच चित्त प्रत्यकमें जोड़े॥ २०५।

कारण महा विछेपका मेला जात जमात।
रन समान ससारमें और न कोउ उपाध॥
और न कोउ उपाधि यथा एहे त्रय व्याधी।
भोजन इनमें धसे तिनोको कहाँ समाधी॥
कह गिरिधर कविराय उपद्रव जो अतिदारन।
राग द्वेष अपमान मान इनकात्रय कारन॥ २०६॥
रोइ रोइके पाइये रुपिया जिसका नाम।
जनजाये फिर रोइये इह सुख जिसको काम॥
इह सुख जिसको काम इसम तिसकाहै रूपी।
जिसके हेत मजूरी करै उठावै कूपी॥
कह गिरिधर कविराय खोज कर्दम धोइ धोई।
पुन वणिज नौकरी कृपीकर रोई रोई॥ २०७॥
गई गई पुनि गइरे करके निशि दिन सोर।
घड्याल पुकारै और कछु,ते समझी कछु और॥
ते समझी कछु और यथारथ नाहम भाषी।
तापर इक दृष्टांत सुनो बदरनकी साषी॥

जपे कौनको जाप करे फिर किनकी सेवा ।
भिन्न आपसे देसे नाकोउ देवी देवा ॥
कह गिरिधर कविराय जपे निशि वासर मतर ।
अह सच्चिदानद अखड अद्वितीय स्वतंतर २११।
तृपावतको पतित नर पुन तपायो गाम ।
सो नहि जावे गग ढिग गगासों उपराम ॥
गगासों उपराम सुरसरी तीर न जावे ।
स्वर्धुनिको क्या काम जु ताके ढिग चलिआवे ॥
कह गिरिधर कविराय त्यों नरा शिरग्रास्यौ मृपा
सो सतसग न करे सतको क्या हे तृपा ॥२१२॥
ग्रही अशीकर ज्ञानकी करी अविद्या घात ।
लोक ईपणा वासना भई दीनता पात ॥
भई दीनता पात सहित देह दृश्य असाता ।
जात पात सब गई जगतका टूट्या नाता ॥
कह गिरिधर कविराय भ्राति तिसके डर रही ।
ब्रह्मविद्यातेग हाथमें जिसने ग्रही ॥२१३ ॥

कह गिरिधर कविराय वासना रखो न भोरा ।
रच न लागे दाग रहे कोरेका कोरा ॥ २१६ ॥
सग न कोऊ राखिये त्याग आनकी आश ।
एकाएकी विचरिये तोडि भ्रातिकी पाश ॥
तोड़ि भ्रातिकी पाश रहे वनमें वा जनमें ।
आतम चितन करे सदा निशि वासर मनमें ॥
कह गिरिधर कविराय चढे जब अपना रग ।
किसकी राखे चाह करे पुनि किसका सग २१७॥
चार पहर दिन हरबसत चार पहर पुनि रात ।
आतम चितन कीजिये त्याग अनातम बात ॥
त्याग अनातम बात प्रसग न कबहुं चलावे ।
अद्वय अखड अपार आतम मन तिसमें लावे ॥
कह गिरिधर कविराय आपको चीने सार ।
देह मन इद्रिय प्राण यह मिथ्या जाने चार२१८।
कारह काम करना जोऊ सोतो कीजे आज ।
मूळ अविद्या नींदते शीघ्रहि तू अब जाग ॥

दोहा ।

परम विरक्तरु ज्ञानिवर, गिरिधरजी कविराज ।
कुडलिये यह तिन रचे, जिज्ञासू जन काज ॥१॥
हैं दोसौ इकीस यह, कुडलिये अतिसार ।
ताको सम्यक् शोधके, सामर्कीन इकतार ॥ २ ॥

इति श्रीकविगिरिधर कृत कुण्डलिया

प्रथमभाग समाप्त १

महिमाजो निर्वेदकी, को कहिसकेउदार ।
त्यागी वधनसों मुकत, बाकी सब गिरफ्तार ॥
बाकी सब गिरफ्तार दीन आधीन भयोजी ।
निज स्वरूपको भूल आपको मान लियोजी ॥
कहि गिरिधर कविराय नलागतहै इक लहिमा ।
जिस क्षण करहै त्याग उसी क्षण होवत महिमा२४
परमारथ पहिली सिढी, जासु नाम निर्वेद ।
पामर ताको नालहै, पावत हैं नित खेद ॥
पावत हैं नित खेद उसे नहि त्याग सके सुध ।
मोह मदिरासे मत्त स्वपर की नहीं रही शुध ॥
कहि गिरिधर कविराय जो नरतनु खोत अकारथ ।
वाह्य सुखी होरहे न समझे कछु परमारथ ॥२२५॥
तहँ विराग की क्या कथा, इन्द्रिय जहँ आराम ।
जोन तोन परकार कर, पोपे हाडरुचाम ॥
पोपे हाड़रु चाम वाह्यसुख भये जनूनी ।
करें आपना घात अनातमदर्शी खूनी ॥

ा जानले स्वकी तीनको एकै रूपम्।
स्थि मास नस चर्म रोम मल मूत्रहि कूपम्॥
हि गिरिधर कविराय पुरुष इन किये अजारी।
॥ दुष्ट न और जगत में जैसी नारी॥ २२९॥
पा मूरति पापकी, ज्यहि पिप भुले गँवार।
र देखाकर नरक का, सन जन करत खुवार॥
जन करत खुवार भ्रमावत विधि पुनि हरिहर।
ह रज्जु गलनाथ नचावत कपिवत घर घर॥
हिगिरिधरकविराय जोइ नर चाहत मोपा।
त्र गहे वैराग्य तजे हाटक भृयोपा॥ २३०॥
ङ्गना देखाकर अङ्गको, करे पुरुषको भ्रान्त।
न्ता याको कहत है, हरे मनुजकी कान्त॥
मनुजकी कान्ति नाम तिसकाहै वामा।
माने नरको बाँध कण्ठ दृढ मोहकि दामा॥
हि गिरिधर कविराय पहिर कर करमें कङ्कना।
स अनर्थ को हेतु कधी गृहत्याव न अङ्गना२३१

सब अनानर गह पगम्बर उम्मत काना
रोजा सुनन कुरान अरह कानेन निमाजा
कहि गिरिधर कविराय यह रस्ता पाया सोला
जामें मजहब फनाह एकला मजहब मौला २३
योगी डूबे योगमें, भोगी डूबे भोग
योग भोग जाके नहीं सो विद्वान अरोग
सो विद्वान अरोग अचाहि अमान असङ्गी
भेद भावस रहित बुद्धि जिसकी यक रङ्गी
कह गिरिधर कविराय ज्ञान बिनहै सब रोगी
भोगी अटके भोग योग में अटके योगी २३८
कलाम बन्दाकी कथे, अन्तर बँस रह्यो मजह
ख्वाहिश दुनियाकी करे, बेवकूफसो अजब
बेवकूफसो अजब बड़ो कोई है मुरौलिया
मूढसभाके मध्य कहावे महा औलिया
कहि गिरिधर कविराय वस्तु देकरे स्लाम
तिसपरमें अरु तोर सो अहमक लाकलाम।२३

काम शैतानों के करे, औलियाओंकी शकल ।
ज़ूर नहै इन्सान की, हैवानोकी अकल ॥
हैवानो की अकल सिंहकी गिरा उचारे ।
सिंह्रानो की क्रिया पकड गोबरेड़े मारे ॥
कहि गिरिधर कवि नरम गरम तर चाहे ताम ।
भिक्षा खावे मांग यही ऊनके काम ॥ २४० ॥
नाना लिप्सा हृदय में, वन बैठे उलियाय ।
से पीर मुरीद को, दोनों को जुतियाय ॥
दोनोंको जुतियाय मगज कर तिनका पोला ।
नैरों लाके देइ धडाधड़ जूता सोला ॥
कहि गिरिधर कविराय पहिर फकिरोंका वाना ।
अजों न लिपसा तजे जूत तिनके शिरनाना२४१॥
नाना करे बतूनिया प्राकृत जन मध फूल ।
पूछन वालो जो मिले जाय फारसी भूल ॥
जाय फारसी भूल प्रबल कोइ फुरे न युक्ती ।
वाग बैखरी रुके न मुखसे निसरे उक्ती ॥

कहि गिरिधर कविराय मूढ मिलकर कम गा।
सर्वपक्ष से रहित बनावे घरमें वाता ॥ २४२
आश्रम वर्ण कुल पन्थ में, जाका है आवेश
ब्रह्मविद्या ता हृदयमें, नाही करत प्रवेश
नाही करत प्रवेश विप्र ज्यू श्वपच अगारा
वहु तीर्थोके डार वहु निकसत वागद्वारा
कहि गिरिधर कविराय भ्रमे भ्रममें निशिवासर
जाकाहै आवेश पन्थकुल वर्ण मध्य आश्रम२४३
धरचो काच सदूकमे, रत्न चुराहे डार
कुत्ती पाली गहम, दीनी धेनु निकार
दीनी धेनु निकार वडो बुधिवत कहावे
रजत काच में मेल चामके दाम चलावे
कहि गिरिधर कविराय जान निज रत्न ।िरहरयो
पुरुष साध्य कर्तव्य हृदय सदूक ले धरचो॥२-
कौडी वाले साधुका, कोड़ी मिले न दाम
कौड़ी विना गृहस्थका, कोई लेय न नाम ॥

कोई लेय न नाम जहाँ तहँ होय अनादर ।
छोड जात सब तिसको पिसर औ पिदर बिरादर॥
कहि गिरिधर कवि दुनिया तिसके रहे कनौड़ी॥
सो गृहस्थ परधान चारहे जिसपे कौड़ी ॥२४५॥
दारा मरे गृहस्थकी, साना तिसे सरान ।
रासे राँड फकीर जो, रहे न तिसकी आन ॥
रहे न तिसकी आन उभय आलमसे जावे ।
ना वह रह्यो गृहस्थ फकिर का पद नहिं पावे ॥
कहि गिरिधर कविराय शोक जो सिन्धु किधारा।
सो नर तिसमें बहे अहै जिसके गृह दारा॥२४६॥
रस सह देसे यती जो, कनक कामिनी दोय ।
तिसी समय वह पतितहो, ब्रह्महत्यारा होय ॥
ब्रह्महत्यारा होय तेज सब हत होजावे ।
मनकी शक्ती चक्षु वाणि ये सकल पलावे ॥
कहि गिरिधरकविराय एक मन औ इन्द्रिय दश।
तिनको करे निरोध त्याग कर लौकिकजेरस२४७

ाहि गिरिधर कविराय विना परिग्रहसोधनी।
ासकीबुद्धि अद्वितीय बाततिसकी सबननी२८०
ा चिह्न अज्ञान का, चित्त व्यायामस्थान।
ास तरुमें सबर्जा कहा, जिसकोटर किरशान॥
ोटरमें किरशानु लता फल रहन न पावे।
ा शब्दादि में पीत जहां तहँ ज्ञान पलावे॥
हि गिरिधर कविराय विषयका करदेत्याग।
ात्म चिन्ता कर रहो नहीं हो लौकिकराग २८१॥
ल, तरुण, अरु वृद्ध यह, अवस्थातनुकी तीन।
ोनों में जो अन्तकी, अति कनिष्ट यह चीन॥
तिकनिष्ट यह चीन करे धीको विपरीत।
स्मरण शास्त्र होत जो पूर्वकीयो अधीत॥
हि गिरिधर कविराय जाति सब स्वाद सयाल।
विद्याका परिणाम नसमझतहैं वृद्धवाल२८२॥
रा अवस्थाके सदृश,नहिं नीच अवस्था आन।
भिव्यञ्जक सब रोगकी, किरपणताकी खान॥

ासवत तेरी किसी सों, नाहें नथी न होग।
इन्नत जिन सँग करे तू, सब सरायँ के लोग॥
न सराँय के लोग समझ कर पकड़ कायदा।
मझेगा जिसवक्त तुझे तब होगा फायदा॥
हि गिरिधर कविराय जिसमकी जेतो किसमत।
ततनोही तिसहोयनाजिस्मीकोंकोइनिसनत २५६
टो बेटी भार्या, भाई श्वशुर अरु सार।
पेता पितामह आदिले, सब मतलबके यार॥
ब मतलबके यार नहीं इनमें कोइ तेरो।
भयो तुझे परमाद जो इनको बन रह्यो चेरो॥
कहि गिरिधर कविराय सबनसे झगरा मेटो।
नतू बाप किसी फेर,तेरा कोई ना बेटो॥ २५७॥
ममता सुत वित नारि में, त्रयतनु में हंकार।
निज आतम विज्ञान बिन, चारों वर्ण चमार॥
चारो वर्ण चमार पुन चारोही आश्रम।
प्रत्यक बोध विहीन नींच डूबे निन विभ्रम॥

हूपा देह अध्यासकी अविद्याको परताप ।
गुन भये स्वरूपते जपे अनातम जाप ॥
पे अनातम जाप न सारासार विचारे ।
लौकिक शब्द विचित्र परस्पर बैठ उचारे ॥
कहि गिरिधर कविराय आपकी माया मया ।
रोपे मलिन सरूप देह अध्यास की हूपा ॥ २८८
करनो जो सो ना करै, मिल देह इन्द्रिय साथ ।
आप हाथ कूप में गिरे डारनो हाथ ॥
गिरे डारतो हाथ निकम्मे रच पैसार ।
आपु देनी गोय भुवन इन भँगये भांड़ ॥
कहि गिरिधर कविराय होत नव नेनो नरनो ।
हूत कृत्य कीने आप छोड़ कर गयो करनो ॥ २८९
करना हो श्रीमधर्म । लौ दुस्यो परताप ।
दुन दुस्याध्यं आस्तो । घटे अविद्या पाप ॥
घटे अविद्या पाप छुटे रूप दह मयोन ।
देह रहित मन मान मां है कोऊ संदे न गांत ॥

सो मम रूप अनूप अकृत्रिम अमित अटूट घन ।
ताहि चोर किमि गहै दौर नहि लहै और तन ॥
गिरिधरन पर ध्यानजन तन अशुभ भय उपशमित
ज्ञानी निःशंक नि कलङ्क निजज्ञान रूप निरमत नित

अकस्मात भयनिवारणमन्त्र । छप्पय

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध सहज सम ऋद्धि सिद्धि सम ।
अटल अनादि अनन्त अतुल अविचल स्वरूप मम
चिद् विलास प्रकाश रहित विकल्प सुधाकर ।
जहि दुविधा नहि कोय होय नहि कछु न अचानक ॥
चर यदविवेक उपजत्न नव अकस्मात भय नहि दिना
ज्ञानी निःशंक नि कलङ्क निजज्ञान रूप निरमत नित

(इति श्रीगिरिधरकृत अकस्मात भय निवारण मन्त्र)

इति गिरिधरकृत कुण्डलिया समाप्ता ।

[illegible]
[illegible]